www.ijarp.com ISSN 2456-9992 Page: 01-18

International Journal Advanced Research Publications

Research Article

Volume: 02
Issue: 07

उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में विद्यालयी वातावरण, अध्ययन आदत एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि: एक सैद्धान्तिक एवं वैचारिक विश्लेषण

अभय कुमार*[1], डॉ वंदना भटनाग [2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश), भारत

[2]प्रोफेसर एवं शोधनिर्देशक-, शिक्षा विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश), भारत

Article Received: 05 June 2026, Article Revised: 25 June 2026, Published on: 15 July 2026

***Corresponding Author:** अभय कुमार
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश), भारत
Doi: https://doi-doi.org/101555/ijarp.6002

सार (ABSTRACT)

विद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का प्रमुख माध्यम है। विद्यालयी वातावरण, अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि ऐसे तीन महत्त्वपूर्ण घटक हैं जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, अधिगम की गुणवत्ता तथा शैक्षणिक सफलता को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। वर्तमान शोध-पत्र का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में इन तीनों अवधारणाओं का सैद्धान्तिक एवं वैचारिक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इस अध्ययन में विद्यालयी वातावरण के भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षणिक आयामों का विस्तृत विवेचन किया गया है तथा अध्ययन आदत के विभिन्न घटकों—समय प्रबंधन, अध्ययन कौशल, आत्म-अनुशासन, प्रेरणा एवं पुनरावृत्ति—का शैक्षिक उपलब्धि से संबंध स्पष्ट किया गया है। शोध-पत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के आधार पर यह प्रतिपादित किया गया है कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में प्रभावी अध्ययन आदतों के विकास को प्रोत्साहित करता है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। उत्तर प्रदेश के विद्यालयी शिक्षा तंत्र की वर्तमान स्थिति, ग्रामीण-नगरीय विषमता, सरकारी एवं निजी विद्यालयों की संरचनात्मक चुनौतियाँ तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में भी इन अवधारणाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन के आधार पर एक वैचारिक मॉडल प्रस्तावित किया गया है जिसमें विद्यालयी वातावरण को अध्ययन आदत के माध्यम से शैक्षिक उपलब्धि का प्रमुख पूर्वानुमानक माना गया है। शोध-पत्र में शिक्षकों, विद्यालय प्रशासकों तथा नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं, जिससे विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण अधिगम वातावरण का निर्माण किया जा सके।

मुख्य शब्द: विद्यालयी वातावरण, अध्ययन आदत, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

1. भूमिका (INTRODUCTION)

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि मानव संसाधन विकास, सामाजिक परिवर्तन तथा राष्ट्रीय प्रगति का आधार माना जाता है। किसी भी राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति उसके विद्यालयी शिक्षा तंत्र की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। विद्यालय वह संस्थान है जहाँ विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक तथा सामाजिक विकास की आधारशिला रखी जाती है। इसलिए विद्यालय की गुणवत्ता केवल पाठ्यक्रम या परीक्षा परिणामों से नहीं, बल्कि वहाँ उपलब्ध **विद्यालयी वातावरण** से निर्धारित होती है। विद्यालयी वातावरण एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें विद्यालय की भौतिक संरचना, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, प्रशासनिक व्यवस्था, अनुशासन, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ, सीखने के संसाधन, सुरक्षा, सहयोगात्मक संस्कृति तथा मनोवैज्ञानिक वातावरण सम्मिलित होते हैं। यदि विद्यालय का वातावरण सकारात्मक, सहयोगपूर्ण तथा प्रेरणादायक हो, तो विद्यार्थी सीखने के प्रति अधिक रुचि विकसित करते हैं, नियमित अध्ययन करते हैं तथा बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत, तनावपूर्ण अथवा संसाधन-विहीन विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की प्रेरणा, अध्ययन व्यवहार तथा उपलब्धि पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

विद्यालयी वातावरण के साथ-साथ **अध्ययन आदत** भी विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता का एक प्रमुख निर्धारक है। अध्ययन आदत से तात्पर्य उन नियमित व्यवहारों, कौशलों एवं रणनीतियों से है जिन्हें विद्यार्थी अध्ययन के दौरान अपनाते हैं। समय प्रबंधन, नियमित पुनरावृत्ति, नोट्स तैयार करना, स्व-अध्ययन, लक्ष्य निर्धारण तथा परीक्षा की योजनाबद्ध तैयारी जैसी आदतें विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता को बढ़ाती हैं। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान यह स्वीकार करता है कि उच्च बौद्धिक क्षमता तभी प्रभावी परिणाम देती है जब उसके साथ सुविकसित अध्ययन आदतें भी हों। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों के अधिगम की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। इसे सामान्यतः परीक्षा परिणामों, उपलब्धि परीक्षणों तथा अधिगम दक्षताओं के माध्यम से मापा जाता है। अनेक शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि शैक्षिक उपलब्धि केवल बुद्धिलब्धि या पारिवारिक पृष्ठभूमि पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विद्यालयी वातावरण, अध्ययन आदत, प्रेरणा, आत्म-प्रभावकारिता, शिक्षक समर्थन तथा सामाजिक परिवेश जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती है।

उत्तर प्रदेश भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है, जहाँ माध्यमिक शिक्षा प्रणाली अत्यंत व्यापक एवं विविधतापूर्ण है। ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों, सरकारी एवं निजी विद्यालयों तथा सामाजिक-आर्थिक

पृष्ठभूमि में व्यापक विविधता होने के कारण विद्यार्थियों के अधिगम अनुभव भी भिन्न होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी वातावरण, विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण, समग्र विकास तथा अनुभवात्मक अधिगम पर विशेष बल दिया है। ऐसे परिदृश्य में विद्यालयी वातावरण, अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का सैद्धान्तिक विश्लेषण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध-पत्र इन तीनों प्रमुख अवधारणाओं के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करता है तथा उत्तर प्रदेश के विद्यालयी संदर्भ में एक वैचारिक मॉडल प्रस्तुत करता है, जो भविष्य के अनुभवजन्य शोध तथा शिक्षा नीति दोनों के लिए उपयोगी आधार प्रदान कर सकता है।

2. विद्यालयी वातावरण की अवधारणा एवं आयाम (Concept and Dimensions of School Environment)

2.1 विद्यालयी वातावरण की अवधारणा

विद्यालय केवल एक भौतिक भवन नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत सामाजिक एवं शैक्षिक संस्था है, जहाँ विद्यार्थियों का बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा नैतिक विकास होता है। विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाएँ, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, प्रशासनिक व्यवस्था, अनुशासन, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, अधिगम संसाधन तथा विद्यालय की संस्कृति मिलकर जिस समग्र वातावरण का निर्माण करते हैं, उसे **विद्यालयी वातावरण** (School Environment) कहा जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान के अनुसार अधिगम केवल कक्षा-कक्ष में शिक्षक द्वारा दिए गए ज्ञान तक सीमित नहीं होता, बल्कि विद्यालय का संपूर्ण वातावरण विद्यार्थियों के व्यवहार, अध्ययन आदत, प्रेरणा तथा उपलब्धि को प्रभावित करता है। एक सुरक्षित, लोकतांत्रिक, सहयोगात्मक एवं प्रेरणादायक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता तथा समस्या-समाधान क्षमता का विकास करता है। इसके विपरीत भय, तनाव, असमानता अथवा संसाधनों की कमी वाला वातावरण विद्यार्थियों के सीखने की गति को बाधित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी विद्यालयों को केवल शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि सीखने वाले समुदाय (Learning Communities) के रूप में विकसित करने पर बल दिया गया है, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी को सुरक्षित, समावेशी, प्रेरक एवं सहयोगात्मक वातावरण उपलब्ध हो। इसी प्रकार UNESCO (2021) ने भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सकारात्मक विद्यालयी वातावरण को अनिवार्य घटक माना है।

विद्यालयी वातावरण का प्रभाव केवल शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह विद्यार्थियों की उपस्थिति, अनुशासन, मानसिक स्वास्थ्य, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक सहभागिता, जीवन कौशल तथा भविष्य की व्यावसायिक सफलता तक दिखाई देता है। इसलिए आधुनिक शिक्षा में विद्यालयी वातावरण को शिक्षा की गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण संकेतक माना जाता है।

2.2 विद्यालयी वातावरण की प्रमुख परिभाषाएँ

विभिन्न शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं ने विद्यालयी वातावरण को अलग-अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है। इन परिभाषाओं का सार निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है।

तालिका–1 : विद्यालयी वातावरण की प्रमुख परिभाषाएँ

विद्वान	प्रमुख विचार
Anderson (1982)	विद्यालयी वातावरण वह सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवेश है जो विद्यार्थियों के सीखने एवं व्यवहार को प्रभावित करता है।
Fraser (1998)	विद्यालय का अधिगम वातावरण विद्यार्थियों के अनुभवों, शिक्षक व्यवहार तथा कक्षा संस्कृति का समग्र रूप है।
Cohen et al. (2009)	विद्यालयी वातावरण में सुरक्षा, संबंध, शिक्षण-अधिगम तथा संस्थागत संरचना सम्मिलित होती है।
UNESCO (2021)	सुरक्षित, समावेशी एवं समान अवसर प्रदान करने वाला विद्यालयी वातावरण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आधार है।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)	विद्यालयों में आनंददायक, विद्यार्थी-केंद्रित एवं बहुआयामी अधिगम वातावरण विकसित किया जाना चाहिए।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि विद्यालयी वातावरण केवल भवन या संसाधनों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विद्यालय अनुभव का प्रतिनिधित्व करता है।

2.3 विद्यालयी वातावरण के प्रमुख आयाम

विद्यालयी वातावरण बहुआयामी अवधारणा है। अधिकांश शोधकर्ताओं ने इसके निम्नलिखित आयामों को महत्वपूर्ण माना है।

(क) भौतिक वातावरण (Physical Environment)

भौतिक वातावरण में विद्यालय भवन, कक्षाएँ, फर्नीचर, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, खेल मैदान, पेयजल, शौचालय, प्रकाश एवं वायु व्यवस्था जैसी सुविधाएँ सम्मिलित होती हैं।

उचित भौतिक सुविधाएँ विद्यार्थियों की एकाग्रता, उपस्थिति तथा अधिगम की गुणवत्ता में वृद्धि करती हैं। आधुनिक स्मार्ट कक्षाएँ, ICT प्रयोगशालाएँ तथा डिजिटल संसाधन अधिगम को अधिक प्रभावी बनाते हैं। इसके विपरीत जर्जर भवन, भीड़भाड़ वाली कक्षाएँ तथा संसाधनों का अभाव विद्यार्थियों की उपलब्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

(ख) मनोवैज्ञानिक वातावरण (Psychological Environment)

विद्यालय का मनोवैज्ञानिक वातावरण विद्यार्थियों की भावनात्मक सुरक्षा, आत्मसम्मान, प्रेरणा, तनाव-रहित अधिगम तथा मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित होता है।

जब विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित एवं सम्मानित महसूस करते हैं, तब वे अधिक सक्रियता से सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। शिक्षक का सहयोगात्मक व्यवहार, निष्पक्ष मूल्यांकन तथा सकारात्मक प्रोत्साहन विद्यार्थियों में आत्मविश्वास विकसित करता है।

(ग) सामाजिक वातावरण (Social Environment)

विद्यालय एक सामाजिक संस्था है। यहाँ विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों से आकर परस्पर सहयोग, सहभागिता तथा नेतृत्व सीखते हैं।

सामाजिक वातावरण के प्रमुख घटक हैं—

- शिक्षक-विद्यार्थी संबंध
- विद्यार्थी-विद्यार्थी संबंध
- अभिभावक सहभागिता
- सहयोगात्मक अधिगम
- लोकतांत्रिक व्यवहार
- लैंगिक समानता
- समावेशी शिक्षा

अच्छा सामाजिक वातावरण विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, सहिष्णुता एवं सहयोग की भावना विकसित करता है।

(घ) शैक्षणिक वातावरण (Academic Environment)

शैक्षणिक वातावरण से तात्पर्य विद्यालय में उपलब्ध शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की गुणवत्ता से है।

इसके अंतर्गत—

- शिक्षक की शिक्षण शैली
- अधिगम सामग्री
- ICT आधारित शिक्षण
- परियोजना कार्य
- मूल्यांकन प्रणाली
- प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता
- रचनात्मक अधिगम

जैसे तत्व सम्मिलित होते हैं।

आधुनिक विद्यालयों में रटने की अपेक्षा अनुभवात्मक, सहयोगात्मक एवं कौशल-आधारित अधिगम पर अधिक बल दिया जा रहा है।

(ङ) प्रशासनिक वातावरण (Administrative Environment)

विद्यालय प्रशासन का प्रभाव विद्यालय की संपूर्ण कार्यसंस्कृति पर पड़ता है।

इसमें शामिल हैं—

- नेतृत्व शैली
- निर्णय प्रक्रिया
- शिक्षक प्रेरणा
- संसाधन प्रबंधन
- पारदर्शिता
- उत्तरदायित्व
- विद्यालय विकास योजना

एक प्रभावी प्रधानाचार्य विद्यालय में सकारात्मक कार्यसंस्कृति विकसित कर सकता है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों की उपलब्धि पर पड़ता है।

(च) सांस्कृतिक वातावरण (Cultural Environment)

विद्यालय की संस्कृति विद्यार्थियों के मूल्यों, नैतिकता तथा सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती है।

विद्यालय में—

- प्रार्थना सभा
- राष्ट्रीय पर्व
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- खेल प्रतियोगिताएँ
- सामाजिक सेवा गतिविधियाँ

विद्यार्थियों में नेतृत्व, अनुशासन एवं नागरिक उत्तरदायित्व विकसित करती हैं।

2.4 विद्यालयी वातावरण के प्रमुख घटकों का वैचारिक चित्र

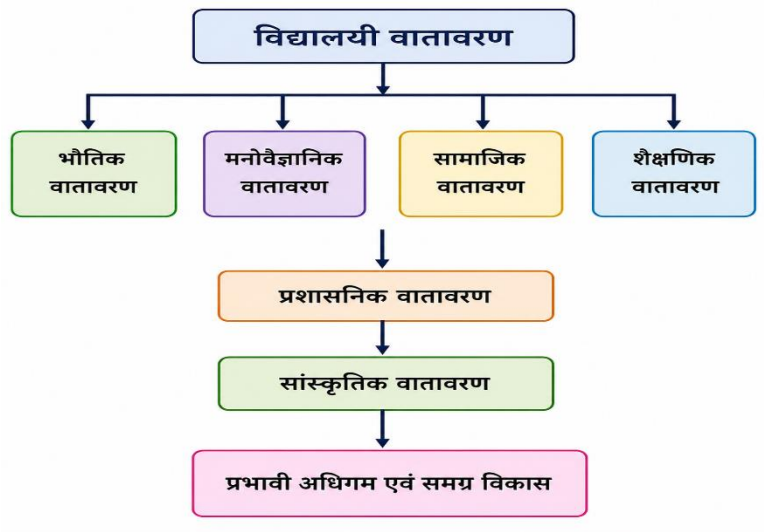

चित्र–1 : विद्यालयी वातावरण के प्रमुख आयाम

3. अध्ययन आदत की अवधारणा एवं आयाम (Concept and Dimensions of Study Habits)

3.1 अध्ययन आदत का अर्थ

अध्ययन आदत (Study Habit) से आशय उन नियमित, योजनाबद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण व्यवहारों से है जिन्हें विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया के दौरान अपनाते हैं। इसमें अध्ययन का समय निर्धारण, अध्ययन की विधि, पुनरावृत्ति, नोट्स बनाना, एकाग्रता बनाए रखना, गृहकार्य पूरा करना तथा परीक्षा की तैयारी जैसी गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं।

अध्ययन आदत जन्मजात नहीं होती, बल्कि यह परिवार, विद्यालय, शिक्षक, साथियों एवं स्वयं विद्यार्थी के अनुभवों से विकसित होती है। अच्छी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों को नियमित, अनुशासित एवं आत्मनिर्भर बनाती हैं तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करती हैं।

3.2 अध्ययन आदत की प्रमुख परिभाषाएँ

तालिका–2 : अध्ययन आदत की प्रमुख परिभाषाएँ

विद्वान	परिभाषा
Crow & Crow	अध्ययन आदत वह नियमित व्यवहार है जो प्रभावी अधिगम में सहायता करता है।
Good (1973)	अध्ययन आदत अधिगम के लिए अपनाई जाने वाली व्यवस्थित एवं दोहराई जाने वाली प्रक्रिया है।
Palsane & Sharma	अध्ययन आदत समय प्रबंधन, पठन, नोट्स, स्मृति एवं परीक्षा तैयारी का समन्वित व्यवहार है।
Deo & Mohan	अध्ययन आदत वह व्यवहारिक प्रतिमान है जो विद्यार्थियों की अध्ययन दक्षता एवं उपलब्धि को प्रभावित करता है।

3.3 अध्ययन आदत के प्रमुख आयाम

अध्ययन आदत के निम्नलिखित प्रमुख आयाम व्यापक रूप से स्वीकार किए गए हैं—

- समय प्रबंधन
- नियमित अध्ययन
- पठन कौशल
- नोट्स निर्माण
- पुनरावृत्ति
- एकाग्रता
- गृहकार्य पूर्ण करना
- परीक्षा की तैयारी
- आत्म-अनुशासन
- अध्ययन प्रेरणा

इन सभी आयामों का संयुक्त प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। जिन विद्यार्थियों में अध्ययन आदतें सुविकसित होती हैं, वे अधिगम प्रक्रिया में अधिक सक्रिय, आत्मविश्वासी तथा सफल पाए जाते हैं।

4. शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा एवं निर्धारक (Concept and Determinants of Academic Achievement)

4.1 शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण तथा व्यक्तित्व का विकास करना है। इस विकास का प्रत्यक्ष एवं मापनीय संकेतक **शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement)** है। सामान्यतः विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् प्राप्त ज्ञान, कौशल एवं दक्षताओं का मूल्यांकन परीक्षा, उपलब्धि परीक्षण, परियोजना कार्य, सतत एवं समग्र मूल्यांकन (CCE) अथवा अन्य शैक्षणिक उपलब्धियों के माध्यम से किया जाता है। इन सभी परिणामों का समेकित रूप शैक्षिक उपलब्धि कहलाता है।

शैक्षिक उपलब्धि केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक (Cognitive), भावात्मक (Affective) तथा क्रियात्मक (Psychomotor) उपलब्धियों का भी संकेत देती है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में इसे सीखने की गुणवत्ता, समस्या-समाधान क्षमता, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता तथा जीवन कौशल के साथ भी जोड़ा जाता है।

4.2 शैक्षिक उपलब्धि की प्रमुख परिभाषाएँ

विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने शैक्षिक उपलब्धि को निम्न प्रकार परिभाषित किया है।

तालिका–3 : शैक्षिक उपलब्धि की प्रमुख परिभाषाएँ

विद्वान	परिभाषा
Good (1973)	शैक्षिक उपलब्धि वह ज्ञान एवं कौशल है जो विद्यार्थी औपचारिक शिक्षा के माध्यम से अर्जित करता है।
Bloom (1976)	अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति का मापन शैक्षिक उपलब्धि है।
Gronlund (1985)	उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा अधिगम अनुभवों से प्राप्त ज्ञान एवं कौशल का मापन है।
NCERT	पाठ्यक्रमीय उद्देश्यों की प्राप्ति का स्तर शैक्षिक उपलब्धि का सूचक है।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा की प्रभावशीलता का प्रमुख संकेतक है।

4.3 शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

विद्यार्थियों की उपलब्धि अनेक कारकों से प्रभावित होती है। इन कारकों को व्यापक रूप से निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) व्यक्तिगत कारक

- बुद्धिलब्धि (IQ)
- अध्ययन आदत
- प्रेरणा
- आत्मविश्वास
- स्वास्थ्य
- व्यक्तित्व

(2) पारिवारिक कारक

- अभिभावकों की शिक्षा
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति
- पारिवारिक सहयोग
- अध्ययन हेतु उपलब्ध संसाधन
- घर का अध्ययन वातावरण

(3) विद्यालयीय कारक

- विद्यालयी वातावरण
- शिक्षक की गुणवत्ता

- अधिगम संसाधन
- अनुशासन
- पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाएँ
- ICT सुविधाएँ

(4) सामाजिक कारक

- साथियों का प्रभाव
- समुदाय
- सांस्कृतिक परिवेश
- डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता

तालिका–4 : शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

कारक	प्रभाव का स्वरूप
विद्यालयी वातावरण	सकारात्मक अधिगम वातावरण उपलब्ध कराता है।
अध्ययन आदत	नियमित अध्ययन एवं समय प्रबंधन विकसित करता है।
शिक्षक	प्रेरणा एवं अधिगम की गुणवत्ता बढ़ाते हैं।
परिवार	भावनात्मक एवं शैक्षणिक सहयोग प्रदान करता है।
सामाजिक-आर्थिक स्थिति	अध्ययन संसाधनों की उपलब्धता निर्धारित करती है।
प्रेरणा	सीखने की इच्छा एवं निरंतरता बनाए रखती है।

5. विद्यालयी वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध

विद्यालयी वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध शिक्षा मनोविज्ञान के सर्वाधिक अध्ययन किए गए विषयों में से एक है। अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों ने यह प्रमाणित किया है कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि करता है।

विद्यालय में यदि—

- शिक्षक सहयोगी हों,
- अनुशासन संतुलित हो,
- अधिगम संसाधन पर्याप्त हों,
- कक्षाएँ सुरक्षित एवं प्रेरणादायक हों,
- विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हो,

तो विद्यार्थियों में सीखने की रुचि, आत्मविश्वास तथा उपलब्धि स्वतः बढ़ती है।

इसके विपरीत—

- भययुक्त वातावरण
- कठोर दण्ड
- संसाधनों का अभाव
- शिक्षक-विद्यार्थी दूरी
- असुरक्षित विद्यालय

विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं।

विद्यालयी वातावरण के प्रभाव की प्रक्रिया

विद्यालयी वातावरण

|

▼

अधिगम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

|

▼

उच्च अध्ययन प्रेरणा

|

▼

बेहतर अध्ययन व्यवहार

|

▼

उच्च शैक्षिक उपलब्धि

6. अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध

अध्ययन आदत शैक्षिक उपलब्धि का सर्वाधिक प्रभावशाली व्यवहारिक निर्धारक माना जाता है।

अच्छी अध्ययन आदत वाले विद्यार्थी—

- नियमित अध्ययन करते हैं।
- समय का उचित उपयोग करते हैं।
- पुनरावृत्ति करते हैं।

- परीक्षा की योजनाबद्ध तैयारी करते हैं।
- आत्म-अध्ययन को प्राथमिकता देते हैं।

फलस्वरूप उनकी उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक होती है।

दूसरी ओर—

- अनियमित अध्ययन,
- समय प्रबंधन का अभाव,
- मोबाइल एवं सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग,
- परीक्षा से ठीक पहले अध्ययन,

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

तालिका–5 : अध्ययन आदत एवं उपलब्धि के मध्य संबंध

अध्ययन आदत	संभावित शैक्षिक प्रभाव
समय प्रबंधन	नियमित अधिगम एवं बेहतर परीक्षा प्रदर्शन
पुनरावृत्ति	दीर्घकालिक स्मृति में वृद्धि
नोट्स बनाना	अवधारणात्मक स्पष्टता
नियमित गृहकार्य	विषय की समझ विकसित होती है
आत्म-अध्ययन	स्व-निर्देशित अधिगम में वृद्धि
परीक्षा योजना	तनाव कम एवं उपलब्धि अधिक

7. विद्यालयी वातावरण एवं अध्ययन आदत का अंतर्संबंध

विद्यालयी वातावरण एवं अध्ययन आदत एक-दूसरे से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं।

यदि विद्यालय—

- शांत हो,
- अनुशासित हो,
- पुस्तकालय समृद्ध हो,
- शिक्षक प्रेरक हों,
- ICT सुविधाएँ उपलब्ध हों,

तो विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से बेहतर अध्ययन आदत विकसित करते हैं।

इस प्रकार विद्यालयी वातावरण **प्रत्यक्ष रूप से** भी तथा **अध्ययन आदत के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से** भी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

8. प्रमुख शैक्षिक सिद्धांतों के आलोक में विश्लेषण

8.1 ब्रॉनफेनब्रेनर का पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत (Ecological Systems Theory)

ब्रॉनफेनब्रेनर के अनुसार विद्यार्थी अनेक सामाजिक परिवेशों से प्रभावित होता है। विद्यालय उसका प्रमुख **Microsystem** है। विद्यालय का सकारात्मक वातावरण उसके व्यवहार एवं उपलब्धि को प्रभावित करता है।

8.2 बंडूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Social Learning Theory)

बंडूरा के अनुसार विद्यार्थी अनुकरण द्वारा सीखता है। विद्यालय में शिक्षक, सहपाठी तथा विद्यालय संस्कृति अध्ययन व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

8.3 विगोत्स्की का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत

विगोत्स्की ने सहयोगात्मक अधिगम, भाषा तथा सामाजिक अंतःक्रिया को सीखने का आधार माना है।
इस सिद्धांत के अनुसार अच्छा विद्यालयी वातावरण अध्ययन आदत विकसित करता है।

8.4 ब्लूम का अधिगम सिद्धांत

ब्लूम ने अधिगम को संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक क्षेत्रों में विभाजित किया।
विद्यालयी वातावरण इन तीनों क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

9. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों का तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका–6 : प्रमुख शोधों का तुलनात्मक सार

अध्ययन	प्रमुख निष्कर्ष
Cohen et al. (2009)	सकारात्मक विद्यालयी वातावरण उपलब्धि बढ़ाता है।
Fraser (1998)	कक्षा का वातावरण सीखने की गुणवत्ता निर्धारित करता है।
OECD (PISA Reports)	सुरक्षित एवं सहयोगात्मक विद्यालयों के विद्यार्थियों का प्रदर्शन बेहतर होता है।
UNESCO (2021)	समावेशी विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाते हैं।
भारतीय अध्ययन (NCERT)	विद्यालयी संसाधनों एवं शिक्षक गुणवत्ता का उपलब्धि से सकारात्मक संबंध पाया गया।

इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि विद्यालयी वातावरण एवं अध्ययन आदत दोनों शैक्षिक उपलब्धि के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक हैं।

11. उत्तर प्रदेश का विद्यालयी शिक्षा परिदृश्य: एक समालोचनात्मक विश्लेषण

भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य होने के कारण उत्तर प्रदेश की विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था देश की सबसे व्यापक एवं जटिल शिक्षा प्रणालियों में से एक है। राज्य में लाखों विद्यार्थी प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हैं। विद्यालयों की संख्या, विद्यार्थियों की विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, ग्रामीण-नगरीय असमानता तथा संसाधनों की उपलब्धता में व्यापक अंतर होने के कारण विद्यालयी वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि में भी उल्लेखनीय विविधता देखी जाती है।

पिछले एक दशक में उत्तर प्रदेश सरकार ने विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुधारात्मक पहलें की हैं, जिनमें विद्यालयों का समेकन, आधारभूत संरचना का विकास, डिजिटल शिक्षा, स्मार्ट कक्षाओं की स्थापना, मिशन प्रेरणा, निपुण भारत मिशन, दीक्षा (DIKSHA) प्लेटफॉर्म का उपयोग तथा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रमुख हैं। इन प्रयासों से विद्यालयों में अधिगम संसाधनों की उपलब्धता एवं प्रशासनिक दक्षता में सुधार हुआ है, किन्तु सभी विद्यालयों में समान गुणवत्ता अभी भी सुनिश्चित नहीं हो सकी है।

ग्रामीण क्षेत्रों के अनेक विद्यालय आज भी प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, अपर्याप्त प्रयोगशालाओं, सीमित पुस्तकालय सुविधाओं तथा डिजिटल संसाधनों के अभाव जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। दूसरी ओर निजी एवं नगरीय विद्यालयों में अपेक्षाकृत बेहतर आधारभूत सुविधाएँ, ICT आधारित शिक्षण तथा समृद्ध अधिगम वातावरण उपलब्ध है। यह असमानता विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करती है।

विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता केवल संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विद्यालय की कार्यसंस्कृति, नेतृत्व, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध तथा अधिगम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः उत्तर प्रदेश में विद्यालयी वातावरण की गुणवत्ता में सुधार केवल अवसंरचना विकास तक सीमित न होकर एक समग्र शैक्षिक सुधार कार्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए।

12. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एवं विद्यालयी वातावरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (NEP-2020) भारतीय विद्यालयी शिक्षा को ज्ञान-केंद्रित प्रणाली से कौशल, नवाचार एवं अनुभवात्मक अधिगम आधारित प्रणाली में परिवर्तित करने का प्रयास करती है। इस नीति में विद्यालयी वातावरण को शिक्षा की गुणवत्ता का प्रमुख आधार माना गया है।

नीति में निम्न प्रमुख बिंदुओं पर विशेष बल दिया गया है—

- सुरक्षित एवं समावेशी विद्यालय।
- विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण।
- अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित अधिगम।
- डिजिटल एवं प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा।
- बहुभाषिक शिक्षा।
- सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम।
- समग्र मूल्यांकन प्रणाली।
- शिक्षक की सतत व्यावसायिक उन्नति।

इन प्रावधानों का उद्देश्य केवल परीक्षा परिणामों में सुधार करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, सहयोगात्मक अधिगम तथा जीवन कौशल का विकास करना है।

तालिका–7 : NEP–2020 एवं विद्यालयी वातावरण के प्रमुख आयाम

NEP–2020 का प्रावधान	विद्यालयी वातावरण पर प्रभाव
अनुभवात्मक अधिगम	सक्रिय एवं सहभागितापूर्ण कक्षा वातावरण
ICT आधारित शिक्षा	डिजिटल अधिगम संसाधनों की उपलब्धता
समग्र मूल्यांकन	तनावमुक्त अधिगम वातावरण
शिक्षक प्रशिक्षण	शिक्षण गुणवत्ता में सुधार
समावेशी शिक्षा	समान अवसर एवं सकारात्मक विद्यालय संस्कृति
बहुभाषिक शिक्षा	बेहतर अधिगम सहभागिता

13. विद्यालयी वातावरण, अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि का वैचारिक मॉडल (Conceptual Framework)

इस शोध-पत्र के आधार पर निम्न वैचारिक मॉडल प्रस्तावित किया गया है।

चित्र–2 : प्रस्तावित वैचारिक मॉडल

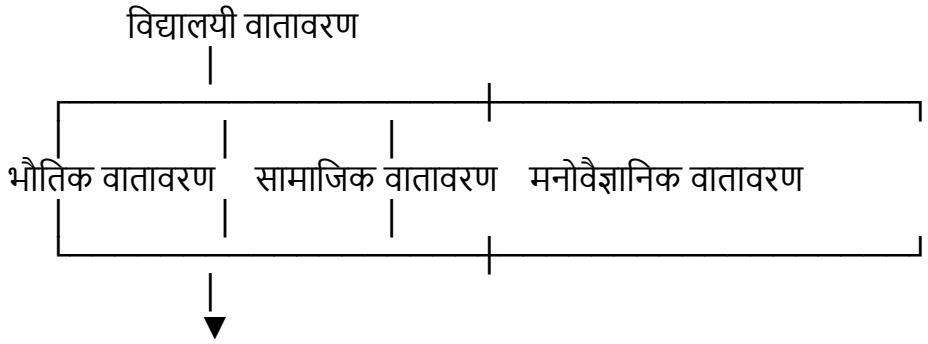

अध्ययन आदत

| समय प्रबंधन |
| नियमित अध्ययन |
| पुनरावृत्ति |
| नोट्स निर्माण |
| आत्म-अनुशासन |

↓

शैक्षिक उपलब्धि

↓

व्यक्तित्व एवं समग्र विकास

मॉडल की व्याख्या

प्रस्तावित मॉडल यह दर्शाता है कि विद्यालयी वातावरण का प्रभाव दो स्तरों पर कार्य करता है—

1. **प्रत्यक्ष प्रभाव** — विद्यालयी वातावरण सीधे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।
2. **अप्रत्यक्ष प्रभाव** — विद्यालयी वातावरण प्रभावी अध्ययन आदतों का विकास करता है, जो आगे चलकर शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करती हैं।

इस प्रकार अध्ययन आदत विद्यालयी वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य एक **मध्यस्थ (Mediating Variable)** की भूमिका निभाती है।

14. शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

प्रस्तुत वैचारिक अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ उभरकर सामने आते हैं—

(1) विद्यालय स्तर पर

- सुरक्षित, स्वच्छ एवं प्रेरणादायक विद्यालयी वातावरण विकसित किया जाए।
- पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं ICT सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
- विद्यालयों में सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा दिया जाए।

(2) शिक्षक स्तर पर

- विद्यार्थियों में नियमित अध्ययन आदत विकसित करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया जाए।
- परियोजना आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण अपनाया जाए।
- विद्यार्थियों को सकारात्मक प्रतिपुष्टि (Feedback) प्रदान की जाए।

(3) अभिभावक स्तर पर

- घर में अध्ययन हेतु अनुकूल वातावरण विकसित किया जाए।
- डिजिटल संसाधनों के संतुलित उपयोग को प्रोत्साहित किया जाए।
- विद्यार्थियों की अध्ययन दिनचर्या पर नियमित ध्यान दिया जाए।

(4) नीति-निर्माताओं के लिए

- ग्रामीण विद्यालयों में ICT सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
- विद्यालयी वातावरण के मूल्यांकन हेतु गुणवत्ता सूचकांक विकसित किया जाए।
- अध्ययन आदत विकास कार्यक्रमों को विद्यालयी पाठ्यचर्या में सम्मिलित किया जाए।

15. भविष्य के शोध की दिशा

वर्तमान अध्ययन के आधार पर भविष्य में निम्न क्षेत्रों में अनुभवजन्य शोध किए जा सकते हैं—

1. विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य।
2. अध्ययन आदत एवं डिजिटल अधिगम।
3. सरकारी एवं निजी विद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन।
4. विद्यालयी नेतृत्व एवं शैक्षिक उपलब्धि।
5. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित अधिगम वातावरण का अध्ययन।
6. समावेशी विद्यालयों में अध्ययन आदत का विकास।
7. विद्यालयी वातावरण एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम।
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के कार्यान्वयन का प्रभाव।

16. निष्कर्ष (CONCLUSION)

विद्यालयी वातावरण, अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा के तीन परस्पर संबद्ध एवं अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम हैं। इस सैद्धान्तिक एवं वैचारिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के अधिगम अनुभव को समृद्ध बनाता है तथा उनमें प्रभावी अध्ययन आदतों का विकास करता है। परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है और वे समग्र व्यक्तित्व विकास की दिशा में अग्रसर होते हैं।

उत्तर प्रदेश जैसे विशाल एवं विविधतापूर्ण राज्य में विद्यालयों के मध्य उपलब्ध संसाधनों, शिक्षक गुणवत्ता तथा अधिगम अवसरों में विद्यमान असमानताओं को कम करना आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है, किन्तु इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए विद्यालयों

की आधारभूत संरचना, शिक्षक प्रशिक्षण, डिजिटल संसाधनों तथा विद्यालय नेतृत्व को समान रूप से सुदृढ़ करना होगा।

प्रस्तावित वैचारिक मॉडल यह संकेत देता है कि विद्यालयी वातावरण का प्रभाव केवल प्रत्यक्ष रूप से नहीं, बल्कि अध्ययन आदत के माध्यम से भी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। इसलिए शिक्षा नीति, विद्यालय प्रशासन तथा शिक्षकों को केवल परीक्षा परिणामों पर ध्यान देने के बजाय ऐसे विद्यालयी वातावरण के निर्माण पर बल देना चाहिए जो विद्यार्थियों में आत्म-अनुशासन, सीखने की अभिरुचि तथा आजीवन अधिगम की संस्कृति विकसित करे।

17. APA 7th Edition संदर्भ (चयनित)

1. Anderson, C. S. (1982). *The search for school climate: A review of the research*. Review of Educational Research, 52(3), 368–420.
2. Bloom, B. S. (1976). *Human Characteristics and School Learning*. McGraw-Hill.
3. Cohen, J., McCabe, E. M., Michelli, N. M., & Pickeral, T. (2009). School climate: Research, policy, practice, and teacher education. *Teachers College Record, 111*(1), 180–213.
4. Crow, L. D., & Crow, A. (1969). *Educational Psychology*. American Book Company.
5. Fraser, B. J. (1998). Classroom environment instruments: Development, validity and applications. *Learning Environments Research, 1*(1), 7–33.
6. Good, C. V. (1973). *Dictionary of Education*. McGraw-Hill.
7. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2023). *National Achievement Survey Report*.
8. Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
9. OECD. (2023). *PISA 2022 Results*. OECD Publishing.
10. UNESCO. (2021). *Reimagining Our Futures Together: A New Social Contract for Education*. UNESCO.
11. Vygotsky, L. S. (1978). *Mind in Society*. Harvard University Press.
12. Bronfenbrenner, U. (1979). *The Ecology of Human Development*. Harvard University Press.
13. Bandura, A. (1977). *Social Learning Theory*. Prentice Hall.
14. Palsane, M. N., & Sharma, S. (1989). *Study Habits Inventory Manual*. Agra Psychological Research Cell.
15. Deo, P., & Mohan, A. (2011). *Study Habits Inventory Manual*. National Psychological Corporation.